इकाई 1 भाषा और संप्रेषण

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 संप्रेषण क्या है?
1.3 संप्रेषण का स्वरूप
1.4 संप्रेषण साधना
1.5 संप्रेषण का तकनीकी पक्ष
1.6 संप्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य
1.7 संप्रेषण के बढ़ते चरण
    1.7.1 सूचना समाज (The information Society)
    1.7.2 संचार (Communication)
    1.7.3 संप्रेषण और संचार में अंतःसंबंध
1.8 भाषा शिक्षण में संप्रेषण का उपागम
1.9 सारांश
1.10 अभ्यास प्रश्न

1.0 उद्देश्य

अर्थ संप्रेषण का सबसे प्रमुख कार्य है। सवाल यह है कि 'अर्थ' क्या है? संप्रेषण/संचार (communication) नामक विषय क्षेत्र भाषा को संप्रेषण/संचार के साधन के रूप में देखता है और जीवन के विविध संदर्भों में मानव व्यवहार के रूप में व्यक्त संदेश को, संप्रेषित वस्तु के रूप में परिभाषित करता है। इस अर्थ में संदेश का संदर्भ भाषा के अर्थ (शब्दार्थ या वाक्यार्थ) से अधिक व्यापक है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- संप्रेषण का तात्पर्य समझा सकेंगे,
- सामाजिक/सांस्कृतिक संदर्भ में संप्रेषण का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे,
- संप्रेषण और संचार का अंतःसंबंध समझा सकेंगे,
- विकसित समाज में संप्रेषण के महत्व की चर्चा कर सकेंगे,
- आधुनिक सूचना समाज में संचार और संप्रेषण के स्थान की व्याख्या कर सकेंगे, और
- संचार और संप्रेषण के क्षेत्र में आगे की संभावनाओं की प्राक्कल्पना कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

भाषा का एक आंतरिक पक्ष है। भाषा एक रचना है। भाषा की व्याकरणिक रचना मन के जटिल भावों को एक-दूसरे पर प्रकट करने में सहायक है। इस दृष्टि से विचारों की अभिव्यक्ति यानी संप्रेषण की प्रक्रिया में भाषा की संरचना साधन का काम करती है।

भाषा का एक बाह्य पक्ष है। भाषा का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ ही भाषा के संप्रेषण का प्रयोजन है। यह भाषा का अर्थ पक्ष है। अर्थ के संदर्भ में हम सूचनाओं के आदान-प्रदान में योगदान करते हैं। जनसंचार तथा दूर संचार के माध्यम से व्यापक संप्रेषण संभव हो पाया था। अब वह युग आ गया है जब संचार और संगणन (Computing) एक साथ मिलेंगे और संप्रेषण को सुदृढ़ बनाएँगे।

भाषाविज्ञान संबंधी पाठ्यक्रम में हम विषय प्रवर्तन के रूप में संप्रेषण की चर्चा से कर रहे हैं। इसका एक कारण है। भाषा के बारे में लोग यही सोचते थे कि भाषा एक व्याकरणबद्ध व्यवस्था है और दो लोगों के बीच विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। लेकिन धीरे-धीरे भाषा की संकल्पना और भाषा के बारे में अध्ययन की दृष्टि में विस्तार होता गया। जहाँ पहले लोग बोलियों को भाषा का विकृत तथा तिरस्कृत रूप मानते थे, आज हम समाजभाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा के विविध रूपों की जीवंतता की चर्चा करते हैं। भाषा पूरे समाज के विविध संदर्भों में संप्रेषण का माध्यम है।

इसी तरह भाषा अध्ययन के विविध संदर्भों में दृष्टि परिवर्तन दिखाई देता है। प्रैग्मैटिक्स नामक भाषाविज्ञान की नई शाखा में हम कोशीय अर्थ से हटकर भाषा व्यहवार मे निहित संप्रेषण को समझने का यत्न करते हैं। इस नई दृष्टि का प्रभाव अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के विविध क्षेत्रों पर भी पड़ा है। भाषा शिक्षण अब मात्र संरचनाओं को कंठस्थ कराने का यत्न नहीं करता, बल्कि संप्रेषण के स्तर पर भाषिक क्षमता के विकास करने का यत्न करता है। इस परिप्रेक्ष्य में संप्रेषण से चर्चा शुरू करना भाषाविज्ञान की अधुनातन प्रवृत्ति को जानने का आधार बन सकता है।

भाषा के कार्य को केवल शब्दार्थ या वाक्यार्थ तक सीमित नहीं कर सकते। संप्रेषण का दायरा भाषिक अर्थ से ही ज्यादा विस्तृत है। हमारी संस्कृति, साहित्य और वाङ्मय, आचार-विचार सभी संप्रेषण की प्रक्रिया से ही संभव हैं, सुरक्षित हैं।

मानव की भाषा प्रारंभ में संभवतः सिर्फ़ आवश्यकताओं की पूर्ति के संप्रेषण मात्र का साधन थी। भाषा के इस्तेमाल के पिछले कुछ सहस्राब्दियों में मानव ने संप्रेषण के इस साधन को माँजकर संपन्न बनाया है और संप्रेषण के विविध संदर्भों और रूपों का विकास किया है। इस दीर्घकालीन परंपरा के कारण हमारे पास ज्ञान-विज्ञान तथा साहित्य के विविध कोष उपलब्ध हैं। इसी को हम व्यापक अर्थ में सांस्कृतिक संप्रेषण की संज्ञा दे सकते हैं। लेखन के आविष्कार से भाषिक संप्रेषण को स्थायित्व मिला। आज भी हम शिक्षा के माध्यम से संप्रेषण को सुदृढ़ करने का यत्न कर रहे हैं।

मनुष्य का प्रारंभिक संप्रेषण व्यक्तिशः होता था। प्रायः दो लोगों की बातचीत, सामूहिक चर्चा तथा यदा-कदा अपने वर्ग को संबोधित करना संप्रेषण के रूप थे। आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी के विकास के कारण संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति आई। संचार के साधनों ने संप्रेषण का स्वरूप ही बदल दिया है। अब हम व्यक्तिशः संप्रेषण से हटकर जनसंचार (mass communication) के युग में पहुँचे हैं। जनसंचार वास्तव में जनता के व्यापक संप्रेषण का ही दूसरा नाम है। इस तरह संचार और संप्रेषण दोनों एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह जुड़े हैं। शायद यही कारण है कि अंग्रेज़ी में दोनों के लिए एक ही शब्द है।

वर्तमान युग में कंप्यूटरों ने सूचना समाज के निर्माण में योगदान किया है। कंप्यूटर सूचनाओं का त्वरित गति से संसाधन ही नहीं करते, बल्कि इंटरनेट तथा नेटवर्क के जरिए संप्रेषण का संदेश इसी लक्ष्य की पूर्ति में व्यक्त होता है।

1.2 संप्रेषण क्या है?

संप्रेषण एक परस्पर क्रिया है, जिसमें एक पक्ष संदेश का संप्रेषण करता है, दूसरा पक्ष उस संदेश को ग्रहण करता है। संप्रेषण हर जीवित प्राणी का गुणधर्म है। चींटियाँ गंध द्वारा अपने समाज के अन्य प्राणियों को शिकार या खाद्यपदार्थ या शत्रु का संदेश देती हैं। मधुमक्खियाँ अपने साथियों को 'नाच' द्वारा संदेश संप्रेषित करती हैं। घोड़ा, कुत्ता आदि जानवर ध्वनियों

के माध्यम से संप्रेषण करते हैं। लेकिन इनका संप्रेषण कथ्य, परिवेश तथा काल की दृष्टि से अति सीमित हैं। इनके मुकाबले मनुष्य की भाषा बसे उन्नत और जटिल संप्रेषण व्यवस्था है, जो काल, परिवेश की सीमाओं के बाहर जटिल से जटिल विषयों के प्रतिपादन में सक्षम है। भाषा की वस्तु के संदर्भ में हम भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष के प्रकरण में विचार करेंगे और उसकी जटिलता के बारे में उसके रचना पक्ष की चर्चा में व्याख्या करेंगे।

मानवों के संप्रेषण के संदर्भ में भी दो पहलू हैं। मनुष्य दो प्रकार से संप्रेषण करता है। भाषिक संप्रेषण में हम उच्चरित या लिखित भाषा के माध्यम से संप्रेषण करते हैं। भाषा-इतर संप्रेषण में मनुष्य इंगित द्वारा, हाव-भाव के माध्यम से अपने विचार संप्रेषित करते हैं। संप्रेषण के ये दोनों माध्यम परिपूरक भी हो सकते हैं, याने व्यक्ति दोनों का एक साथ भी उपयोग कर सकता है।

मानवों के संप्रेषण का एक अन्य आयाम स्थानापन्न संप्रेषण है। मूक-बधिर व्यक्तियों की संकेत भाषा (sign language), व्यापारी आदि की गुप्त भाषा (secret language) आदि वास्तव में मानव की उच्चरित या लिखित भाषा के प्रतिरूप हैं।

इस चर्चा के संदर्भ में कह सकते हैं कि उन्नत संप्रेषण व्यवस्था का सबसे अच्छा उदाहरण मानवों की भाषा है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि भाषा संप्रेषण का सबसे अच्छा माध्यम है। भाषा की परिभाषा देते हुए कहा जाता है कि भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। यानी भाषा के इस्तेमाल में वक्ता और श्रोता (या लेखक और पाठक) ये दो पक्ष अनिवार्य हैं। भले ही हम अपने मन में (अपने आपसे) बातचीत कर लें, भाषा के व्यहवार के लिए दो पक्ष चाहिए ही। परस्पर व्यवहार में दोनों व्यक्ति क्रम से एक दूसरे को किसी व्यवहार के लिए प्रेरित करते हैं। यानी वाक् व्यापार परस्पर व्यवहार का आधार बनता है। अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन ही भाषिक संप्रेषण का लक्ष्य है। संप्रेषण का संदेश इसी लक्ष्य की पूर्ति में व्यक्त होता है। इस तरह परस्पर व्यहवार के लिए संदेश के उचित संप्रेषण की अनिवार्यता है। इस परस्पर भाषिक व्यवहार का माध्यम जो भी हो (पत्र लेखन, रेडियो प्रसारण, टेलीफ़ोन पर बातचीत) या उसका स्वरूप जो भी हो (लेखन, बातचीत, संकेत, हाव-भाव), कुल मिलाकर संदेश संप्रेषण ही हमारा प्रमुख ध्येय है। इस तरह संप्रेषण का केंद्र बिंदु संदेश है।

1.3 संप्रेषण का स्वरूप

संप्रेषण की प्रक्रिया को समझने के कई ढंग हैं। फ्रेड़ेरिक विलियम्स (1984 : पृ. 24) कहते हैं कि निम्नलिखित पाँच दृष्टियों से हम संप्रेषण का अध्ययन कर सकते हैं :

(1) संप्रेषण व्यवस्था का सबसे प्रमुख उपभोक्ता मनुष्य है। इस संदर्भ में हम जान सकते हैं कि मानवों की संप्रेषण व्यवस्था यानी भाषा का स्वरूप क्या है, उससे हम क्या और कैसे संप्रेषण करते हैं। हम आपसी संबंध संप्रेषण से कैसे स्थापित करते हैं, हम भाषा के माध्यम से संप्रेषण का विस्तार कैसे करते हैं आदि। भाषाविज्ञान के विविध रूप इस अध्ययन क्षेत्र में आते हैं।

(2) हम संप्रेषण के सामाजिक संदर्भों की चर्चा कर सकते हैं जैसे व्यक्तिगत संप्रेषण (चिंतन), व्यक्तिशः संप्रेषण (वार्तालाप), समूह, संगठन तथा सार्वजनिक स्तर पर संप्रेषण।

(3) हम संप्रेषण के प्रकार्यों और प्रभाव की चर्चा कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर यह शोध कर सकते हैं कि संप्रेषण किस हद तक मनोरंजन का साधन है, संप्रेषण

से हम जन मानव में व्यवहार परिवर्तन कैसे ला सकते हैं या उन्हें सामाजिक-राजनीतिक संदेश कैसे दे सकते हैं।

(4) संप्रेषण की वस्तु क्या है यह भी चर्चा का विषय है। संदेश संप्रेषण का केंद्र बिंदु है। हम यह देखना चाहेंगे कि संप्रेषण में संदेश का क्या स्थान है।

(5) हम संप्रेषण के व्यवहार की जीवंत प्रक्रिया का अध्ययन कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर बातचीत और रेडियो प्रसारण संप्रेषण की भिन्न स्थितियाँ हैं। स्रोत, माध्यम, संदेश, प्राप्तिकर्ता आदि दृष्टियों से इनमें अंतर होगा।

इस तरह जीवन में भाषा के उपयोग के सभी संदर्भ संप्रेषण के संदर्भ हैं। इस दृष्टि से भाषा और संप्रेषण की अभिन्नता परिलक्षित होती है। इस अभिन्नता का कारण दोनों के स्वरूप की विशेषता है। भाषा ध्वनि, लिपि आदि बाह्य तत्वों से निर्मित व्यवस्था है, जिसमें उन तत्वों का काम केवल भाषिक तत्वों को पहुँचाना है। भाषा की व्यवस्था वह चैनल है जो अर्थ का वहन करता है। भाषा द्वारा संप्रेषित अर्थ वह संदेश है जो वक्ता भाषा के माध्यम से दूसरों (श्रोताओं) तक पहुँचाता है। संप्रेषण में भी समान स्थिति है जिसे निम्नलिखित प्रकार से एक आरेख से दिखा सकते हैं :

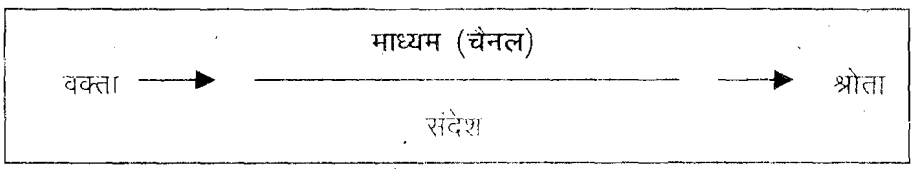

वक्ता और श्रोता संदेश संप्रेषण के लिए संप्रेषण भाषा का उपयोग करते हैं। संप्रेषण के इन आयामों की विशिष्ट चर्चा तीन विशिष्ट अध्ययन क्षेत्रों में होती है।

(i) संप्रेषण का एक **भाषिक पक्ष** है, जिसका अध्ययन भाषाविज्ञान के अंतर्गत होता है। भाषा के माध्यम से हम विचारों का आदान-प्रदान कैसे करते हैं, कैसे एक दूसरे को समझते हैं आदि इसके विषय क्षेत्र में आते हैं। अच्छा संप्रेषण वक्ता को अपने लक्ष्य की सिद्धि में मदद देता है। अगर आप किसी प्रयोजन वे किसी को पत्र लिखें, लेकिन अपना अभीष्ट अर्थ संप्रेषित न कर पाएँ, तो पत्र लिखने का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। खराब विज्ञापन बिक्री में बढ़ोतरी नहीं कर सकता, ठीक से तैयार न किया गया जीवन वृत्त नौकरी पाने में मदद नहीं कर सकता। इन सब स्थितियों में संप्रेषण का भाषिक पक्ष महत्वपूर्ण है। इस तथ्य से अवगत होने के कारण आजकल संस्थाओं और संगठनों में लोगों के लिए संप्रेषण के विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। विश्वविद्यालयों में प्रशासनिक संप्रेषण (office communication), व्यावसायिक संप्रेषण (business communication) आदि प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

(ii) संप्रेषण का एक **भौतिक पक्ष** है, जिस अर्थ में हम हिंदी में 'संचार' शब्द का व्यवहार करते हैं। संचार चैनलों के माध्यम से होता है। अगर ये चैनल ठीक से काम न करें, तो संदेश सही ढंग से नहीं पहुँचेगा। इस विषय क्षेत्र में हम यह अध्ययन करते हैं कि संचार माध्यम कितने सक्षम हैं और संदेश वाहन में कहाँ तक कारगर हैं। दूसरी तरफ़ हम यह भी अध्ययन करते हैं कि विभिन्न प्रकार के संप्रेषणों के आयोजन में हम किस प्रकार के संचार माध्यम का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए टेलीकांफ्रेंसिंग आधुनिक युग में सामूहिक संप्रेषण का एक सशक्त संदर्भ है, जिसमें संसार के हर कोने के लोग भाग ले सकते हैं। यह संप्रेषण तभी संभव होगा, जब संदेश के प्रसारण के लिए उपग्रह संचार की सुविधा मिल जाए। संचार में प्रौद्योगिक विकास की स्थिति से हम संप्रेषण की क्षितिज रेखा बढ़ाते जा रहे हैं।

(iii) संप्रेषण का एक **सामाजिक पक्ष** है। यह भाषा के अर्थ पक्ष के समान है। हम संप्रेषण के माध्यम से क्या संदेश देते हैं? सबसे प्रमुख संदेश आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया संभाषण है। जैसे :

ग्राहक : साबुन है? दुकानदार : हाँ, है।
ग्राहक : एक दीजिए।

आवश्यकताओं की पूर्ति वाला यह संप्रेषण प्राणिमात्र की विशेषता है और रचना की दृष्टि से जटिल नहीं है। मनुष्य का भाषा के माध्यम से संप्रेषण इससे कहीं व्यापक है, अत्यंत जटिल है। हम भाषा के माध्यम से अपेक्षित व्यवहार ही नहीं व्यक्त करते, बल्कि श्रोता के साथ अपने संबंधों को भी प्रकट करते हैं। इस तरह 'चुप बैठ', 'ज़रा बैठ जाइए', 'विराजिए', 'तशरिफ़ रखिए' आदि प्रयोग मूलतः बैठने के व्यापार की अपेक्षा करते हैं, साथ में श्रोता की स्थिति, उसका वक्ता से संबंध आदि संदर्भों का भी संप्रेषण करते हैं।

संस्कृति मानवों की विशेषता है, जिसे मानव समुदाय पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं। इसको हम अगली पीढ़ी तक का सांस्कृतिक संप्रेषण कह सकते हैं। इस संप्रेषण में भाषा की लेखन परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिन संस्कृतियों में लेखन की व्यवस्था नहीं है, उनमें वाचिक परंपरा (oracy) ज्ञान के भंडार को सुरक्षित रखने और आगे बढ़ाने में योगदान करती है।

1.4 संप्रेषण साधना

संप्रेषण के बारे में हमने चर्चा की कि इसके दो प्रमुख पात्र हैं – वक्ता और श्रोता। जब तक दोनों में संदेश के आदान-प्रदान की सक्रिय सहभागिता न हो, सफल संप्रेषण नहीं हो सकता। इसके भी दो पहलू हैं जो सफल संप्रेषण में सहयोगी हैं।

सफल संप्रेषण का एक आधार भाषाई दक्षता है। वक्ता को संदर्भ के अनुसार उचित भाषा का उपयोग करना चाहिए। विचारों का तार्किक क्रम, वक्ता के कथन के संदर्भ में सही प्रतिक्रिया, अपने वक्तव्य के संदर्भ में अपने मनोभावों को यथोचित ढंग से व्यक्त करने के लिए सही शब्दावली और उपयुक्त भाव-भंगिमा का प्रदर्शन, वक्तव्य की स्पष्टता आदि विशेषताएँ संप्रेषण को प्रभावपूर्ण बनाती हैं। इसी को हम वक्तृत्व क्षमता की संज्ञा देते हैं।

संप्रेषण का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है कि हम जानें कि संदेश अभिप्रेत या अभीष्ट रूप में श्रोता तक पहुँच गया है या नहीं। आपने अनुभव किया होगा कि कभी आप गंभीरता से कोई बात कहते हैं और श्रोता समझता है कि आपने मज़ाक किया है। अक्सर आपने लोगों को यह कहते सुना होगा – "भई, मैं तो मज़ाक कर रहा था, आप तो ख़ाम ख़ाह नाराज़ हो गए।" इन स्थितियों में दोनों को संप्रेषण के चैनल को साधना होता है। इसके लिए दोनों अक्सर संप्रेषण के तार जोड़ने का यत्न करते हैं जिसे निम्नलिखित कथनों/उक्तियों से समझा जा सकता है। "मेरी बात समझ गये न?", "मेरा कहने का मतलब है....", "अगर दूसरे शब्दों में कहूँ...."। इन उक्तियों से समझ सकते हैं कि वक्ता और श्रोता दोनों संवाद की स्थिति में आश्वस्त होना/करना चाहते हैं कि संदेश ठीक से पहुँच रहा है या नहीं। संप्रेषण की विविध विधाओं में हम संप्रेषण की कुशलता या संप्रेषणीयता को सुनिश्चित करने के लिए विविध युक्तियों का उपयोग करते हैं। **भाषण** में वक्ता किन्हीं बातों पर बल देते हुए स्वर ऊँचा करते हैं जिससे मालूम हो सके कि वह महत्वपूर्ण बात है, श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहते हैं 'समझ रहे हैं', 'आप तो जानते ही हैं' आदि, अपनी बातें दुहराते हैं तथा दुहराव की सूचना भी देते हुए कहते हैं – "मैं फिर यह बात दुहराना चाहता हूँ।"

लेखन में शीर्षक देना, शब्दों को रेखांकित करना आदि भौतिक युक्तियों के साथ कथनों के माध्यम से भी संप्रेषणीयता सुनिश्चित किया जाता है। 'संक्षेप में....', 'दूसरे शब्दों में ....', 'उल्लेखनीय है.....', 'खास बात यह है .....' आदि उक्तियाँ संदेश को संप्रेषणीय बनाने के उद्देश्य से व्यवहार में लायी जाती हैं। संवाद में इस तरह की उक्तियाँ हैं – 'मैं जो कह रहा हूँ उसे ज़रा ध्यान से सुनिए', 'शायद आपका कहने का मतलब यह है...', 'मैं यह तो नहीं कह रहा था....'

1.5 संप्रेषण का तकनीकी पक्ष

संप्रेषण को समझने के लिए 'कोड' (code) शब्द को समझना आवश्यक होगा। आप सब तार के लिए व्यवहृत मोर्स कोर्ड से परिचित ही हैं। इसमें अंग्रेज़ी के अक्षरों के लिए ध्वनि संकेतों (signals) का प्रयोग कर मोर्स के चिह्न (sign) निर्मित किए जाते हैं। अंग्रेज़ी वर्तनी को चिह्नों में बदलने की प्रक्रिया को हम कोडबद्ध करना (encoding) कहते हैं और प्राप्त ध्वनियों से मूल शब्द शब्दों को पहचानने की क्रिया कोड खोलना (decoding) कहलाती है। भाषा के मुकाबले 'कोड' शब्द का प्रयोग इसी कारण सार्थक है कि हम इस कोड का प्रयोग किसी भी भाषा के लिए कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम निश्चित करें कि संदेश को किन नियमों से कोडों में बाँधें। अगर व्यक्ति उन नियमों से अपरिचित हो,तो वह संदेश तक नहीं पहुँच सकता। इस दृष्टि से भाषा भी एक कोड व्यवस्था है। हम यह निश्चित करते हैं कि उच्चरित ध्वनियों से बने प्रतीकों (शब्दों) को किन व्याकरणिक नियमों से संदेश के संप्रेषण के लिए कोड व्यवस्था का रूप देते हैं।

भाषा बोलते समय हमारे मन में विचार हैं, जो संप्रेषणीय संदेश हैं।। इन्हें हम किन्हीं नियमों के अधीन भाषिक उक्तियों रूप में व्यक्त करते हैं। यह कोडबद्ध करने की प्रक्रिया है। सुनने वाला कोड की व्यवस्था को उन्हीं नियमों के अधीन खोलता है और संदेश तक पहुँचता है। इस तरह वक्ता और श्रोता दोनों कोड के संसाधन (processing) द्वारा संदेश देने और लेने की प्रक्रिया (यानी संप्रेषण) से गुज़रते हैं। उसी तरह जैसे तार बाबू कोड पहचानकर संदेश (यानी तार का पाठ) लिख लेता है। अंतर यही है कि तार का संदेश बहुत सरल रचना है, भाषा के स्वाभाविक संप्रेषण की रचना बहुत जटिल है, जिसकी चर्चा आगे करेंगे। संप्रेषण की स्थिति में कोड में व्यवधान (noise) भी आता है जो संदेश को समझने में बाधा पहुँचाता है। व्यवधान का एक सरल, समझ में आने वाला उदाहरण है वर्तनी का दोष। कभी एक गलती भी हो तो संदेश को समझने में कुछ कठिनाई होती है। अगर हमें संदेश का पूर्वानुमान हो, तो हम अंदाज़ से संदेश को समझ लेते हैं। यह भी संप्रेषण के संसाधन की एक प्रक्रिया है। अगर एक वाक्य में कई गलतियाँ हों, तो संदेश (अर्थ) को समझने में बड़ी कठिनाई होती है। भाषा में लगभग हर स्तर पर ऐसे व्यवधान की संभावना रहती है, जैसे उच्चारण, वाक्य विन्यास, शब्द प्रयोग, शैली आदि। व्यक्ति जब तक भाषा का सही प्रयोग न करे,तो भाषा के माध्यम से संप्रेषण सफल नहीं होता। इसलिए भाषा शिक्षणविद् भाषा के सहज संप्रेषण पर बल देते हैं।

संप्रेषण की दृष्टि से व्यवधान (noise) दो तरह के हैं। एक व्यवधान को हम भौतिक अर्थ में 'शेर' ही कह सकते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर दो व्यक्ति भरे बाज़ार में खड़े हों और बात कर रहे हों तो उन्हें एक दूसरे को समझने में कठिनाई हो सकती है, क्योंकि चारों तरफ़ शोरगुल का वातावरण है। हालांकि उनके कोड में कोई दोष नहीं है। इस तरह के व्यवधान को हम माध्यम का व्यवधान (Channel noise) कहते हैं। भाषा के संदर्भ में हमें अक्सर माध्यम व्यवधान के बीच में से अर्थ ग्रहण करना पड़ता है। ऐसे उदाहरण हैं शोर वाला रेडियो कार्यक्रम, भीड़भाड़ में बातचीत, टेलीफ़ोन पर बातचीत जहाँ आवाज़ स्पष्ट नहीं है, जहाँ चार-पाँच लोग एक साथ बोल रहे हो, या जब व्यक्ति बीमारी या खुमारी की वजह

से ठीक से बोल न पा रहा हो। इन सब स्थितियों में भाषा को समझने का अभ्यास भी भाषा अध्ययन का अंग होना चाहिए। दूसरी स्थिति वर्तनी दोष, वाक्य संरचना दोष आदि हैं जो कोड को भी प्रभावित करते हैं। इन्हें हम कोड का व्यवधान (code noise) कहते हैं। संप्रेषण से जुड़े हुए व्यक्तियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि वे माध्यम के व्यवधान में भी किस तरह संदेश पहुँचा या प्राप्त कर सकते हैं। प्रभावी संप्रेषण के लिए यह भी आवश्यक है कि हम संप्रेषण में कोड के व्यवधान (या भाषा दोषों) का परित्याग करें जिससे संदेश विकृत न हो।

1.6 संप्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

आमतौर पर यह कहा जाता है कि जनजातियों की भाषाएँ अविकसित होती हैं। यह भी माना जाता है कि उनकी भाषा का कोई व्याकरण नहीं होता। यह भ्रमपूर्ण कथन है हम संप्रेषण संदर्भ में जानते हैं कि हर भाषा या बोली अपने में स्वायत्त स्वयंपूर्ण व्यवस्था होती है। यह भी हम जानते हैं कि भाषा एक कोड है और उसके संकोडीकरण और विकोडीकरण में निश्चित व्यवस्था होती है। अगर कोड नियमबद्ध न हो तो किसी भी भाषा में संप्रेषण संभव नहीं हो सकता है। विकसित भाषा में और जनजातियों की (अविकसित) भाषाओं में अंतर व्याकरणिक व्यवस्था के कारण नहीं है बल्कि संप्रेषण के अन्य साधनों के कारण है।

विकसित भाषाओं में हम भाषा के परिमार्जन की योजना बनाते हैं और भाषा में काम करने के लिए सहायक संदर्भ ग्रंथ और साधन जुटाते हैं। समाज भाषावैज्ञानिक इस प्रक्रिया को कोड विस्तार की संज्ञा देते हैं। कोड विस्तार की संज्ञा पर विविध विषयों में भाषा में काम करने के लिए पारिभाषिक शब्द बनते हैं और अभिव्यक्तियों का भंडार एकत्र होता है। इन्हीं सहायक सामग्रियों को हम शब्दकोष, व्याकरण आदि संदर्भ ग्रंथों के रूप में उपलब्ध कराते हैं। यू कह सकते हैं कि विकसित और मौखिक भाषाओं के अंतर कोड व्यवस्था के कारण नहीं है बल्कि कोड विस्तार की प्रक्रिया के कारण है। यह बात सही है कि लिखित भाषाओं में लेखन की दीर्घकालीन परंपरा के कारण कोड विस्तार संभव हो पाता है जबकि भाषा की भाषिक परंपरा में कोड विस्तार नहीं हो पाता। इस दृष्टि से ये भी सही है कि जिन भाषाओं को हम अविकसित कहते हैं उनमें विविध विषयों में काम करने की क्षमता कम होती है। संक्षेप में, जनजातियों की भाषाएँ उनकी अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए सक्षम हैं लेकिन व्यापक वैशविक ज्ञार्नाजन के लिए उनकी क्षमता कम है।

यह भी अक्सर कहा जाता है कि जनजातियों की संस्कृतियाँ मुख्यधारा से हटी हुई हैं। लेकिन यह भ्रमपूर्ण कथन भी सुनने में आता है कि जनजातियों की संस्कृतियाँ दृष्टि से पिछड़ी हुई हैं। जिस तरह से कोई मानव समाज भाषाविहीन नहीं हो सकता उसी तरह कोई मानव समाज संस्कृतिविहीन नहीं हो सकता। अंतर अगर है तो, संस्कृति के स्वरूप के सवाल के कारण। आदिम संस्कृतियाँ व्यक्तियों के व्यवहार के नियंत्रक-नियोजक के रूप में काम करती हैं। लेकिन ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनभिज्ञ होने के कारण यह संभव है कि उनकी कुछ मान्यताएँ या विचार तर्कसंगत न हों। लेकिन इससे किसी संस्कृति को अविकसित नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक ज्ञान-विज्ञान के व्यवहार का सवाल हैं आदिम संस्कृतियों में भी कुछ ऐसी ज्ञान राशियाँ हैं जो तथाकथित वैज्ञानिक समाज के पास भी नहीं हैं। लेकिन विकसित और अविकसित समाजों में सांस्कृतिक स्वरूप के अंतर का क्या कारण है? जिस तरह भाषा के क्षेत्र में लेखन की व्यवस्था के कारण ज्ञानराशि जुड़ती गई उसी तरह सांस्कृतिक दृष्टि से विकसित समाज में ज्ञान का भंडार जुड़ता गया है। यह ज्ञानराशि (Body of Knowledge) विकसित भाषाओं का प्रमुख अभिलक्षण है। धर्म दर्शन के ग्रंथ, हजारों वर्षों से संचित साहित्यिक कृतियाँ, चिकित्साविज्ञान, अर्थशास्त्र आदि विविध अध्ययन क्षेत्रों में उपलब्ध वाड्.मय हर विकसित समाज में सांस्कृतिक धरोहर हैं। इस ज्ञानराशि की उपलब्धि में उस संस्कृति के लिखित संप्रेषण का बहुत बड़ा योगदान है। दूसरे

शब्दों में कह सकते हैं कि विकसित भाषाओं में कोड विस्तार और ज्ञान विस्तार साथ-साथ चलते हैं जबकि कम विकसित समाजों में कोड और वांड्.मय का प्रभाव क्षेत्र सीमित होता है। इस दृष्टि से संप्रेषण विशेषकर लिखित संप्रेषण, समाज और संस्कृति के विकास के प्रमुख कारक तत्व हैं।

1.7 संप्रेषण के बढ़ते चरण

प्रारंभिक युगों में संप्रेषण व्यक्तिगत संपर्क का दूसरा नाम था। मानव संस्कृति के विकास के साथ संप्रेषण में व्यापकता आती गई। लेखन के कारण लोगों के विचार काल और समय से परे संप्रेषित हो सके। आधुनिक युग में संचार साधनों के विकास के कारण संप्रेषण ने संचार का रूप धारण किया और संप्रेषण सामूहिक सहभागिता के संदर्भ में जन संचार के रूप में व्यवहार में आया। आज कंप्यूटरों के कारण संप्रेषण में अभूतपूर्व क्रांति आयी है। चूँकि हम संचार साधनों के माध्यम से व्यापक स्तर पर संप्रेषण करते हैं, हमारे लिए आवश्यक हो जाता है कि हम सही ढंग से संदेश संप्रेषित करें।

1.7.1 सूचना समाज (The information society)

सभ्यता के आरंभ से अब तक के मनुष्य के इतिहास का वर्णन करते हुए उसे तीन विशिष्ट युगों में बाँटा जाता है। सबसे पहला युग था कृषि प्रधान समाज का। उसके बाद युग था औद्योगिक विकास के समाज का। आज के युग में सूचना समाज की प्रधानता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सूचना ने कृषि या उद्योगों को स्थानापन्न कर दिया हो। कृषि प्रधान समाज में सारे लोग कृषि पर आधारित थे। औद्योगिक विकास के युग में कृषि का विकास और विस्तार हुआ, फिर भी समाज के कुछ ही लोग कृषि कार्यों में लीन थे। शेष उद्योगों की स्थापना करने लगे। इसी तरह सूचना युग में सूचना प्रौद्योगिकी के कारण कृषि और उद्योगों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, लेकिन इनमें पहले के मुकाबले में कम लोग लगे हैं, शेष सूचना प्रौद्योगिकी को समुन्नत करने में लगे हैं।

जिस समाज में सूचना और संचार का महत्व अधिक हो, वहाँ कृषि कैसे उन्नत हो सकती है? संचार के कारण अब लोगों के पास कृषि के तरीकों के बारे में अच्छी जानकारी है। इसलिए वे कम समय में अच्छे तरीके से अपना काम कर पाते हैं। एक मिलता-जुलता उदाहरण लीजिए। कृषि प्रधान समाज में एक एकड़ ज़मीन को जोतने में कई व्यक्ति, हफ़्तों लगकर काम करते थे। औद्योगिक विकास के कारण अब यह काम एक व्यक्ति ट्रैक्टर की सहायता से एक दिन में करता है। इस तरह नये साधन और नयी जानकारी लोगों के काम को आसान बना देते हैं। आज सूचना संचार 'ज्ञान का उद्योग' (knowledge industry) कहलाता है, जो अन्य उद्योगों से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

इस सूचना समाज के क्रांतिकारी आविर्भाव में दो प्रमुख कारक तत्व हैं। एक, कंप्यूटर, जो सूचनाओं के कच्चे माल को ग्रहण करता है और संसाधित कर उसे उपभोक्ताओं लायक 'ज्ञान' में बदलकर प्रस्तुत करता है। दूसरे, उपग्रह संचार आदि संचार के उन्नत तरीके, जो उस ज्ञान को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाते हैं।

अब हम संप्रेषण के माध्यमों के संदर्भ में संचार के विविध रूपों की चर्चा करेंगे और देखेंगे कि आने वाले युग में भाषा के क्षेत्र में संचार के कितने नए आयाम खुलते हैं और भाषा के अध्ययन में रत व्यक्तियों के लिए कितने नये कार्य क्षेत्र खुलते हैं।

संचार के युग में व्यवहृत नई तकनीकों और सुविधाओं से आप अपरिचित नहीं हैं। आज हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति कंप्यूटर के कार्यों और इंटरनेट की संभावनाओं से अपरिचित नहीं हैं। इसी तरह दूर संचार में भी अभूतपूर्व क्रांति हुई है और लोग अपनी जेब में मोबाइल फ़ोन

लेकर चलते हैं, मानो वे अपना टेलीफ़ोन एक्सचेंज अपने साथ लेकर चल रहे हों। लोगों के साथ संप्रेषण के दूसरे छोर पर जो लोग हैं वे अपने पाठकों और श्रोताओं तक हर पल पहुँचने में सफल हुए हैं। टी.वी. पर विज्ञापन, इंटरनेट पर विज्ञापन, मोबाइल पर खबरें, 24 घंटे के समाचार चैनल, वीडियो टेक्स्ट आदि आक्रामक रूप से श्रोताओं तक पहुँचते हैं। वाणिज्य-व्यापार, प्रशासन/प्रबंध, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में इस संचार क्रांति के दूरगामी परिणाम परिलक्षित हो रहे हैं। हम आगे कुछ प्रमुख क्रांतिकारी प्रयत्नों की चर्चा करेंगे।

1.7.2 संचार (Communications)

To Communicate का तात्पर्य है संदेश देना। इस अर्थ में व्यक्तिगत वार्तालाप संप्रेषण का एक प्रमुख रूप है, क्योंकि इसमें हम एक-दूसरे के साथ संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं। क्षेत्र का विस्तार करते हुए हम रेडियो, अखबार आदि के माध्यम से भी संदेश संप्रेषित करते हैं। अखबार आदि के माध्यम से भी संदेश संप्रेषित करते हैं। माध्यम के महत्व के कारण इस तरह के संप्रेषण को संचार कहा जाता है। रेडियो, टेलीफ़ोन आदि संचार के साधन हैं। इस प्रकार अंग्रेज़ी शब्द Communication के लिए हिंदी में दो शब्द हैं संप्रेषण और संचार। संदेश देने के अर्थ में संप्रेषण व्यापक शब्द है। संप्रेषण की कुछ विशिष्ट स्थितियों को संचार की संज्ञा दी जाती है। अखबार, टेलीविजन आदि संचार के माध्यम भी संदेश संप्रेषित करते हैं।

दूर संचार (Tele-Communications)

व्यक्तिशः संप्रेषण की स्थिति के अंतिरिक्त हम टेलीफ़ोन आदि की सहायता से दूर तक संदेश संप्रेषित करें तो यह दूर संचार कहलाएगा। इस शब्द से संदेश की अपेक्षा चैनल का प्रकार्य प्रमुख है। टेलीफ़ोन, टेलेक्स, टेलीप्रिंटर आदि दूर संचार के साधन हैं। प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ यह बात जानना चाहते हैं कि किस तरह बिना व्यवधान के, सही ढंग से संदेश इन माध्यमों से संप्रेषित हो पाता है। अगर माध्यम ठीक से काम न करे तो, संदेश स्पष्ट नहीं होगा, यानी संप्रेषण सफल नहीं होगा। अतः संदेश की प्रकृति के अनुसार माध्यम को कारगर बनाना आज की प्रौद्यागिकी का लक्ष्य है।

जन संचार (Mass Communication)

व्यक्तिगत संप्रेषण में व्यक्ति संदेश देने के लिए एक व्यक्ति को या एक विशाल जन सभा को संबोधित कर सकता है। यह संप्रेषण क्षेत्र, समय तथा श्रोतागण की दृष्टि से सीमित है। हम लेखन के माध्यम से इन तीनों सीमाओं को लाँघ सकते हैं और माइक की सुविधा से लाखों की संख्या में लोगों को संबोधित कर सकते हैं। पुस्तक लेखन या लाउड स्पीकर से संबोधन दोनों व्यक्तिगत संप्रेषण ही कहलाएँगे।

इसकी तुलना में जन संचार एक अतिविकसित आधुनिक संप्रेषण व्यवस्था है, जिसमें संदेश प्रसारण करने वाला एक व्यक्ति नहीं, पूरा समाज है और संदेश प्रसारण पूरे समाज के लिए है। इस तरह यह सामाजिक संप्रेषण है, जो जन संचार के साधनों से ही संभव हो पाया है। रेडियो, टेलीविज़न, पत्रकारिता इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इनमें संदेश एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि अनेकों व्यक्तियों का समन्वित संप्रेषण है, जो सारी जनता के लिए है। माध्यम को महत्व देने के कारण इसे जन संचार कहा जाता है (जो mass communication का सहज अनुवाद लगता है), वास्तव में प्रयोजन की दृष्टि से यह जन संप्रेषण है।

संचार माध्यमों ने लेखन में कई नई विधाओं को जन्म दिया, जैसे रेडियो रूपक, रिपोर्ताज, परिचर्चा आदि। संचार साधनों के कारण टेलीकांफ्रेंसिंग, दूर संचार के साधनों का उपयोग करते हुए श्रोताओं के सक्रिय सहयोग से भेंट वार्ता आदि नये कार्यक्रम विकसित हुए। जन संचार की व्यापक पहुँच के कारण व्यापारिक/व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए विज्ञापन का विकास हुआ और जनतांत्रिक रूप से जनमत के संग्रह के शोधपरक आयाम खुले। इस

तरह जन संचार ने आधुनिक जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। इस अर्थ में भी सूचना समाज की संज्ञा सार्थक लगती है।

इस व्यापक पहुँच के कारण जन संचार लोगों की सोच, व्यवहार तथा कार्यविधि पर प्रभाव डालता है। अक्सर यह कहा जाता है कि यौन तथा हिंसा की घटनाओं से भरी फिल्मों के कारण बच्चों में नकारात्मक गुण पैदा हो जाते हैं। जन संचार के वैश्विक स्वरूप के कारण घटनाओं और विचारधाराओं का सारे विश्व पर प्रभाव पड़ता है। समाजशास्त्री यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि आगे के युग में सूचना संचार का विश्व पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

1.7.3 संप्रेषण और संचार में अंतःसंबंध

हम आधुनिक युग में समाज पर संचार के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में चर्चा करते हैं। अक्सर हम चर्चा सुनते हैं कि सिनेमा, टेलीविज़न जन संचार के माध्यमों के कारण युवाओं में सेक्स तथा हिंसा के प्रति रुझान होता जा रहा है। इसी तरह यह भी चर्चा सुनने में आती है कि भारतीय जनता पश्चिम के कार्यक्रमों के कारण भारतीय परंपरा और मूल्यों से विमुख होते जा रहे हैं। इस प्रकार की चर्चा का आधार क्या है?

सिनेमा, टेलीविज़न, पत्र-पत्रिकाएँ आदि केवल जन संचार के माध्यम हैं और समाज ही उनके संदेश का निर्धारण करता है। आजकल भारत में भक्ति, साधना, स्वास्थ्य संबंधी पत्रिकाओं का बढ़ता मार्केट है। इसकी तुलना में यह भी उल्लेख कर सकते हैं कि पश्चिम के समाज ने संघर्ष करके यौन स्वच्छंदता की पत्रिकाओं के प्रकाशन की स्वतंत्रता हासिल की है। इस तरह हम संचार माध्यमों से किस संदेश का संप्रेषण कर रहे हैं या करना चाहते हैं यह समाज सापेक्ष है। इसका सीधा संबंध सामाजिक मूल्यों से है। मूल्यों की भिन्नता के कारण ही विदेशी कार्यकमों के अवांछित प्रभाव की बात कही जाती है। एक तरफ़ हम विदेशी कार्यक्रमों के प्रतिबंध, सेंसर द्वारा काट-छाँट आदि की बात सोच सकते हैं। दूसरी ओर यह भी कहा जा सकता है कि हम विदेशी संस्कृति को विदेशी ही मानकर ग्रहण करें और अपनी परंपराओं से नाता जोड़े रखें।

1.8 संप्रेषण का उपागम

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में 40 के दशक से वाक्य संरचना पर आधारित उपागम (approaches) अपनाये गये। सामाजिक संदर्भ से कटे वाक्यों का अर्जन अधिक आकर्षक नहीं लगा। 60 के दशक में भाषा शिक्षणविदों ने प्रयोजनपरक भाषा शिक्षण का उपागम अपनाया। उस समय English for Specifial Purposes के नाम से वैज्ञानिकों के लिए अंग्रेज़ी पाठ्यक्रम, वाणिज्य-व्यापार के लिए अंग्रेज़ी पाठ्यक्रम आदि विशिष्ट प्रयोजनों वाले पाठ्यक्रमों का सिलसिला शुरू हुआ। इन दोनों ही उपागमों में भाषा की उपलब्धि का स्तर संतोषजनक नहीं था, क्योंकि अध्येता का ध्यान रचना या प्रयोजन पर केंद्रित हो जाता है और वे भाषा में सहज संप्रेषण नहीं कर पाते हैं। इसलिए 8वें दशक में संप्रेषणपरक भाषाशिक्षण का प्रवर्तन हुआ।

संप्रेषणपरक शिक्षण का उपागम यह मानकर चलता है कि भाषा मूलतः संप्रेषण की वस्तु है। इस कारण भाषा का उचित रूप से अर्जन तभी होता है जब संप्रेषण द्वारा सहज संप्रेषण के लिए भाषा सीखी जाए। सवाल यह उठता है कि संप्रेषण द्वारा सीखने का तात्पर्य क्या है? बेमेल वाक्य साँचे रटने में सार्थकता नहीं आती, क्योंकि संदर्भ से कटा कोई वाक्य बोध की परिधि में नहीं आता। संदर्भ में भाषा के संप्रेषण के कुछ प्रयोजन होते हैं। हम दुकान में *मोलभाव* के प्रयोजन से बातचीत करते हैं, अध्यापक छात्रों से सही व्यवहार *समझाने* के उद्देश्य से बात करते हैं। रेलगाड़ी में पास बैठे अपरिचित व्यक्ति से 'आज बड़ी गर्मी है' कहने का उद्देश्य है परिचय बढ़ाना, दोस्त से 'यह साड़ी कहाँ से ली?' पूछने का प्रयोजन

है तारीफ़ करना। ऐसे हर संप्रेषण की स्थिति का अपना एक गठन होता है। जैसे मोलभाव की स्थिति में 'दाम ज्यादा है', 'नहीं एक दाम है', 'कुछ कम करो', 'नहीं पूरा नहीं पड़ता ' आदि उक्तियाँ व्यवहृत होती हैं। भाषा शिक्षक यह कोशिश करता है कि ऐसे संप्रेषण की आवश्यक्ताओं (Communictive needs) को ध्यान में रखकर अध्यापक परिवेश का निर्माण करे और परिवेश के अनुरूप उक्तियाँ बोलने का अभ्यास कराए। इसी को हम संप्रेषणपरक भाषा शिक्षण कहते हैं। यह उपागम भाषा अर्जन में सहजता और स्वाभाविकता लाने की कोशिश करता है, जो हर संप्रेषण की स्थिति का सहज गुण है।

1.9 सारांश

भाषा संप्रेषण का साधन है अर्थात् दो व्यक्ति भाषा के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। जब व्यक्ति माइक का इस्तेमाल करता है, तो संप्रेषण का क्षेत्र बढ़ जाता है; जब व्यक्ति लेखन का उपयोग करता है, तो उसका पाठक वर्ग क्षेत्र और काल की दृष्टि से विस्तृत हो जाता है। इस तरह विज्ञान में उन्नति और प्रौद्योगिकी के विकास के कारण संप्रेषण का विस्तार होता गया।

हम जिन माध्यमों से संप्रेषण करते हैं उन्हें संचार साधन कहते हैं और वह संप्रेषण भी आधुनिक संदर्भ में संचार कहा जाता है। यह रोचक तथ्य है कि अंग्रेज़ी में संप्रेषण, संचार दोनों के लिए एक ही शब्द है - Communication। हिंदी में भाषिक व्यापार संप्रेषण है, संप्रेषण के साधनों के संदर्भ में भौतिक संदेश संप्रेषण संचार है।

संप्रेषण के तीन पक्ष हैं – संप्रेषित करने वाला (वक्ता या लेखक), संदेश जो संप्रेषित किया जाता है और संदेश ग्रहण करने वाला (श्रोता या पाठक)। भाषा की दृष्टि से संदेश की संप्रेषणीयता का सवाल आता है। उस दृष्टि से भाषा एक कोड है, अर्थ की वाहिका है। अगर कोड त्रुटिपूर्ण हो तो संदेश संप्रेषित नहीं होगा। इस कारण शुद्ध उच्चारण, सही लेखन, उपयुक्त शब्दों का प्रयोग, व्याकरण सम्मत वाक्यों की रचना संप्रेषण के लिए आवश्यक है। यह संप्रेषण का भाषा वैज्ञानिक पक्ष है।

भाषिक संप्रेषण में दोनों पक्षों में परस्परता (interactivity) एक प्रमुख लक्षण है। इस कारण वक्ता और श्रोता (या लेखक और पाठक) यह सुनिश्चित करते हैं कि संदेश उचित ढंग से संप्रेषित हो रहा है या नहीं। संप्रेषण को साधना एक अनिवार्य कौशल है, जिसकी झलक संप्रेषण की स्थितियों में देखी जा सकती है। संप्रेषण के औपचारिक संदर्भ है जैसे पत्र लेखन, भाषण, साक्षात्कार, कार्यालय की बैठक आदि। उन संदर्भों में विचारों के संप्रेषण को औपचारिक रूप में निश्चित किया गया है। जैसे पत्र लेखन में संबोधन, विषय प्रवर्तन, स्वलेख, भेजने वाला का पता आदि लेखन को संदेश की दृष्टि से सुनिश्चितता प्रदान करते हैं। इस तरह विविध विधाओं की भाषा, शब्दावली, अभिव्यक्तियाँ आदि विधागत भाषिक अभिलक्षण हैं, जो संप्रेषणीयता सुनिश्चित करते हैं।

संचार का संदर्भ भौतिक साधनो से है। आधुनिक युग में दूर संचार, उपग्रह संचार, इंटरनेट आदि साधन विकसित हुए हैं, जिनसे संप्रेषण के नये आयाम खुले हैं। टेलीकांफ्रेंसिंग एक नया संप्रेषण है, जिसमें विश्व भर के विद्वान पूरी परस्परता के साथ विचार-विमर्श में भाग ले सकते हैं। यह भौतिक संप्रेषण के कारण ही संभव हुआ है।

जन संचार (mass communication) उधार-अनुवाद को प्रक्रिया से बना शब्द है। वास्तव में यह संप्रेषण का एक नया आयाम है जिसमें पूरा समाज संदेश देने और लेने का काम करता है। रेडियो, पत्रकारिता, टेलीविज़न आदि में परस्परता के अभाव में भी लोगों की

व्यापक प्रतिभागिता रहती है। वैसे संचार साधनों के विकास के कारण इनमें परस्परता भी बढ़ी है। जन संचार ने इस बदलती परिस्थिति में कई नई विधाओं को भी जन्म दिया है। जन संचार के साधन केवल सूचनाओं का ही प्रसारण नहीं करते, बलकि वैचारिक धरातल पर भी समाज दूसरे समाजों को अपने संदेश से प्रभावित कर सकते हैं। इसे लोग संस्कृति पर प्रभाव के रूप में देखते हैं और इसकी उपादेयता या अवांछनीयता के बारे चिंताशील है।

1.10 अभ्यास प्रश्न

1. निबंधात्मक प्रश्न
   - (1) संचार और संप्रेषण की संकल्पनाएँ स्पष्ट कीजिए।
   - (2) संप्रेषण के स्वरूप की विवेचना कीजिए।
   - (3) संचार साधनों के संदर्भ में सूचना समाज की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

2. टिप्पणियाँ
   - (1) संचार और संप्रेषण का अंतःसंबंध
   - (2) संप्रेषण का सामाजिक पक्ष
   - (3) सूत्रता समाज
   - (4) भाषा शिक्षण में संप्रेषण का महत्व
   - (5) जनसंचार